ब्रह्मज्ञान

अखंड आनंद की गुरुचाबी

श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी के अनमोल पुष्प

पुष्प: ४

ब्रह्मज्ञान
अखंड आनंद की गुरुचाबी

प्रकाशक :
श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान
Shri Prannath Global Consciousness Mission

संपर्क सूत्र :
श्री निजानन्द आश्रम
नेशनल हाईवे नं ८ बाईपास, सयाजीपुरा, वडोदरा **390019**
Email : premseva7@yahoo.com; manulpdc@yahoo.com
Phones: 989-800-0168, 787-415-1371, 942-736-4535

श्री निजानन्द आश्रम
रतनपुरी, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
Phone: 9811072951

Lord Prannath Divine Center, U.S.A/ Canada
914, 2nd Street, Macon, GA-31201
Email : jagni7@yahoo.com; jagnicorp@yahoo.com
Phones: 011-973-760-9238; 011-478-808-4079
Website: www.nijanand.org

श्री निजानन्द आश्रम, साढ़ोली
पो. झबरेडा, जिल्ला. हरिद्वार, उत्तराखंड
Email : shrinetrapalji@gmail.com;
Website : anantshriprannath.com

मुद्रक :
दर्शन प्रिन्टर्स
५, रघुनाथ हिन्दी हाईस्कूल के सामने, मेम्को-बापुनगर रोड,
बापुनगर, अमदावाद. मो. ९७२५२ १९९०८

भूमिका

अनन्त सृष्टियों के अस्तित्व के जो मूल आधार हैं, सभी आत्माओं के जो एक मालिक हैं, सर्व शक्तियों के जो मूल स्त्रोत हैं, ऐसे प्रियतम परमात्मा ही प्राणनाथ हैं। जी हाँ, हम सभी उस आनंद स्वरुप सच्चिदानन्द प्रियतम रुपी सागर की लहरें हैं, आत्मायें हैं। आध्यात्मिक मार्ग में इस प्रकार का परस्पर आत्मीयता का भाव निहीत होता है। सम्पूर्ण मानव जाति को एकात्म-भाव से, दिव्य प्रेम की तार से जोड़ना ही धर्म का वास्तविक उद्देश्य है।

साथियों ! संसारी खेल में प्रियतम प्राणनाथ सत्य और असत्य की पहचान करा कर संसार को एक सूत्र में जोड़ने हेतु ब्रह्मज्ञान लेकर पधारे हैं। इसे तारतम वाणी भी इसलिए कहते हैं, क्योंकि यह दिव्य ज्ञान, मोह माया के अज्ञानरुपी अंधकार को चीर कर परम आनन्ददायी दिव्य प्रकाश की ओर ले जाने वाला है।

श्री प्राणनाथ जी (श्री जी) के श्रीमुख से अवतरित यह वाणी श्री कुलजम स्वरुप महाग्रन्थ के रुप में स्थित है, जो वर्तमान संसार को मिली हुई अनमोल आध्यात्मिक संपदा है। इसमें संसार के समस्त धर्मग्रन्थों में निहित सत्य ज्ञान के रहस्यों को स्पष्ट कर के उनका एकीकरण किया गया है। इसमें विशेष रुप से उन अनादि आध्यात्मिक प्रश्नों का जैसे कि - मैं कौन हूँ ? कहां से आया हूँ ? मेरा प्रियतम कौन है ? आदि का निराकरण किया गया है। श्री जी फरमाते हैं कि मनुष्य मात्र प्रियतम परमात्मा की आत्म-प्रिया है, उनकी आत्म-अंगना है। इस भाव को दृढ कर लेने से आत्मा अपने प्रियतम परमात्मा का सुख ले सकती है।

तारतम ज्ञान का इस ब्रह्मांड में अवतरण सन् १६२१ ई. में हुआ, जब परब्रह्म अक्षरातीत ने अपने आवेश स्वरुप से श्री निजानन्द स्वामी धनी श्री देवचन्द्रजी (१५८१-१६५४) को दर्शन दिया। वही बीजरुप ज्ञान आगे चलकर श्री कुलजम स्वरुप रुपी वटवृक्ष बन गया, जो आज संसार को सुख शीतलता प्रदान कर रहा है। श्री कुलजम स्वरुप में निहित ब्रह्मज्ञान का अवतरण १६५९ ई. (नौतनपुरी, जामनगर) से १६९२ ई. (पन्ना, म.प्र.) तक ३३ वर्ष के समयावधि आत्म-जागृति

यात्रा के दरम्यान अलग-अलग जगह पर हुआ। इसमें कुल १८,७५८ चौपाईयां हैं, जो १७ रत्नरुप ग्रंथों में प्रस्तुत हैं। निज-आनन्द(शाश्वत सुख) के पथ पर अग्रसर आत्मखोजी के लिए तो यह वाणी सच्चिदानन्द परब्रह्म अक्षरातीत का ज्ञानमयी स्वरुप ही है।

इस वाणी में जो 'महामति' की छाप है, वह प्रियतम परब्रह्म की महानतम दिव्य शक्तियों का सामूहिक स्वरुप है। मिहिरराज ठाकुर(१६१८-१६९४ ई.) जिनका लौकिक नाम है, पांच शक्तियां विराजमान होने से वे प्रियतम परब्रह्म की मेहर से 'महामति' पद की शोभा प्राप्त करते हैं और इनके तन में विराजमान परब्रह्म अक्षरातीत की शक्ति की पहचान कर लेने वाला 'सुन्दरसाथ' समुदाय उन्हें प्राणनाथ कह कर संबोधित करता है, यथार्थ में क्षर पुरुष एवं अक्षरब्रह्म से परे अक्षरातीत परब्रह्म ही प्राणनाथ है।

जामनगर राज्य (गुजरात) में दीवान पद पर आसीन मिहिरराज ने अपने सद्गुरु निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्र जी (१५८१-१६५४ ई.) की प्रेरणा से भौतिक सुखों को त्याग कर आत्म-जागृति अभियान का महासंकल्प लिया। बारह साल की आयु में वे अपने सद्गुरु के चरणों में आये और तारतम ज्ञान प्राप्त किया। अद्वैत प्रेम के स्वरुप की पहचान कर के स्वयं सेवा, समर्पण और प्रेम की मूर्ति बन गये। आध्यात्मिकता को अपने जीवन के केन्द्र में रख कर ही उन्होंने अपना कुटुम्ब धर्म, समाज धर्म, देश धर्म और मानव धर्म निभाया। उन्होंने मानवतावादी दृष्टि से प्रत्येक मानव में निहित आत्म-चेतना को परमात्म-चेतना से जोड़ा। व्यक्ति, समाज, धर्म और विश्व मंच को एक आध्यात्मिक कड़ी से जोड़ा। अतः उनके समन्वयात्मक प्रयासों का और उनकी वाणी का सम्यक मूल्यांकन संकीर्ण सांप्रदायिक परिधि से बाहर हो कर ही संभव है।

इसके साथ साथ सामाजिक जीवन के महत्त्वपूर्ण व्यावहारिक प्रश्नों को भी उन्होंने सुलझाया। वे परिवर्तनकारी सामाजिक क्रान्ति में निमित्त रुप बने। धर्म के नाम पर फैले अंध-विश्वास, अस्पृश्यता, छुआ-छूत, जाति-पाति और ऊंच-नीच,

भेदभाव, हिंसा, विविध प्रकार के व्यसनों में लिप्तता, स्त्री-वर्ग को होने वाले अन्याय, धार्मिक असहिष्णुता, दिखावे मात्र का धर्मपालन, कर्मकांडोंकी जड़ता, धार्मिक क्षेत्र में बाह्यआडंबर द्वारा शोषण आदि सामाजिक समस्याओं को सुलझाने का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने आज से ४०० वर्ष पूर्व की रुढ़िग्रस्त मिथ्या मर्यादाओं में जकड़े हुए समाज को नवचेतना प्रदान की, जिसकी आज के सामाजिक जीवन में और भी आवश्यकता है।

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भी अहिंसा आंदोलन और चरखे से क्रांति की प्रेरणा श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान से अपने बचपन में अपनी माता जी पुतलीबाई के माध्यम से प्राप्त की थी। ऐसे अनेको विश्व के महान मानवतावादी विचारकों पर श्री प्राणनाथ जी के ज्ञान का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

इस पुष्प में प्रस्तुत दिव्य वाणी की चौपाईयां आपके समक्ष श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान की महिमा प्रदर्शित करेगी।

साथियों ! इस तारतम वाणी के बल से ही १६७८ ई. (संवत १७३५) में हरिद्वार में महाकूंभ के पर्व पर महामति जी विजयाभिनन्द निष्कलंक बुद्ध के रुप में जाहिर हुए थे। इतना ही नहीं, मुगल सम्राट औरंगजेब के दरबार में सर्वधर्म समभाव का संदेश लेकर अपने बारह सुन्दरसाथ को भी भेजा और मुगल सम्राट को धर्म का सच्चा स्वरुप बताया साथ ही अनेकों हिन्दू राजाओं को भी ज्ञान से जाग्रत किया। अंततः उन्हें मिले वीर बुन्देला छत्रसाल (१६४८-१८३१ ई.), जिन्होंने उनके संरक्षण में बुंदेलखंड में आदर्श आध्यात्मिक राज्य की स्थापना की और उसकी राजधानी पन्ना शहर (म.प्र.) को वैश्विक आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र बनाया।

साथियों ! ज्ञान और प्रेम तो बांटने से ही बढ़ता है। अतः आज विश्वभर में करोड़ों लोग इस ब्रह्मज्ञान के मार्गदर्शन में स्वयं आत्म-जागृति प्राप्त करके संसार को लाभान्वित करने की सेवा कर रहे हैं। श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान से प्रेरित साथी इस सद्भावना से आप तक श्री प्राणनाथ वाणी के इस पुष्प को लेकर पहुंचे हैं।

आपका जीवन इस पुष्प की दिव्य खुश्बू से भर जाये और आप स्वयं भी इस महक को फैलाने में जूट जायें, हम यही हार्दिक मंगल कामना करते हैं। आपके आत्मस्वरुप में कोटि-कोटिसप्रेम प्रणाम।

ब्रह्मज्ञान-प्रियतम परमेश्वर की संसार को अनमोल भेंट

परमात्माने मनुष्य को ज्ञान और प्रेम ये दो लक्षण अमूल्य रत्नों के रुप में भेंट किये हैं। इनकी कीमत पहचान कर अपना जीवन उन्नत बनाने वाला मनुष्य दोनों जहाँ (लोक-परलोक, कालमाया-योगमाया) में धन्य धन्य हो जाता है। ज्ञान और प्रेम के निखार से ही आत्मा के आनन्द को अर्थात् अपने 'निज-आनन्द' को पाया जा सकता है।

साथियों ! बुद्धि के स्पन्दित होने से ज्ञान निखरता है और हृदय के स्पन्दित होने से भक्ति और प्रेम। ज्ञान और बुद्धि का संबंध जहां मस्तिष्क से है, तो प्रेम और भक्ति का हृदय से। अतः इन दोनों के संयोग से ही हमारे जीवन में सफलता और सुख की फसल पकती है। इसी से हम अपने आप को और अपने अस्तित्व के मूल स्त्रोत परमात्मा को जान कर उनके श्री चरणों में पहुंच सकते हैं। इतना ही नहीं उनके दिव्य स्वरुप में एकाकार भी हो सकते हैं।

वेदों का कथन है: **"ब्रह्मविद्याम् सर्वविद्यातिस्था।"** अर्थात, ब्रह्मविद्या सर्व प्रकार के ज्ञान की आधारशिला है। यह वह दिव्य झरना है, जिसमें से ज्ञान की सभी शाखायें प्रकट होती हैं। जिस प्रकार विशालकाय वटवृक्ष की सभी शाखाओं तक पोषक तत्त्व जड़ से ही पहुंचते हैं, उसी प्रकार

ब्रह्मविद्या से ज्ञान की सभी शाखाओं को सदा सदा के लिए जीवन रस मिलता रहता है।

इस संसार में ब्रह्मज्ञान ही एक ऐसा धन है, जो मनुष्य को अमरत्व की प्राप्ति कराने में सक्षम है। अखंड मोक्ष का मार्ग इसी से प्रशस्त होता है। ब्रह्मज्ञान ही वह राजविद्या है, जो सभी विद्याओं में श्रेष्ठ है। इसी से सच्चिदानंद परब्रह्म परमात्मा के स्वरुप, धाम और लीला की पहचान होती है। जीव, आत्मा और परमात्मा के स्वरुप और परस्पर संबंध की पहचान होती है। सृष्टि और अनन्त ब्रह्माण्डों के रहस्यों का ज्ञान होता है। धर्म के नाम पर चल रहे संप्रदायों की संकुचितता ब्रह्मज्ञान से ही समाप्त हो जाती है। सच्चे सत्गुरु की कृपादृष्टि और मार्गदर्शन में ब्रह्मज्ञान से यह सब संभव है।

साथियों ! हम आप को ऐसे ब्रह्मज्ञान का परिचय करवाने जा रहे हैं, जो अब तक संसार के लिए अज्ञात ही रहा है, और जिसका अवतरण इस सौभाग्यशाली २८ वें कलियुग के अन्तिम चरण में होना शास्त्रों में पहले से ही लिखा हुआ है।

यही है श्री कुलजम स्वरुप में निहित श्री प्राणनाथ जी का तारतम ज्ञान। सच्चिदानंद परमात्मा के हृदयकमल से प्रवाहित प्रेम ही इस जगत में इस ब्रह्मज्ञान के रुप में आया है। साक्षात् परब्रह्म के मुखारविन्द के ये वचन उनकी निज-आवेश

शक्ति के स्वरुप है, जो श्री महामतिजी के माध्यम से अथाह सागर के रुप में स्वत: प्रगट हुए हैं।

यह दिव्य वाणी आत्मा एवं परमात्मा, अर्थात अंग और अंगी की अनुपम गाथा के रुप में प्रस्तुत है। इसी ज्ञान के प्रकाश से संसार का अज्ञान रुपी अंधकार समाप्त होना है। सभी धर्म-ग्रंथों के गुह्य रहस्यों को खोल कर आत्मा को क्षर, अक्षर से परे अक्षरातीत उत्तम पुरुष के परमधाम में स्थित करने वाली, पूर्व अवतरित धर्मग्रंथो में रही अपूर्णता और अस्पष्टता को दूर करके समस्त सृष्टि के जीवों को एक रस करने वाली यह दिव्य वाणी सभी धर्म शास्त्रों के ज्ञान रुपी मंदिर पर कलशवत् प्रतिष्ठित है।

इसे 'नूरी ईलम' भी इसलिये कहा जाता है क्योंकि यह ज्ञान (इलम) परब्रह्म के हृदय से जगत् में प्रकट हुआ है - अत: निष्कलंक (संशय रहित) है। इस ज्ञान को अपने हृदय में बिठाकर ही प्रेम का सच्चा स्वरुप प्रगट होना है।

साथियों ! जाग्रत ज्ञान से ही मिथ्या अहंकार का लय होता है, और हृदय में प्रेम का अंकुर फूटता है। प्रेम का प्रकटन ब्रह्मज्ञान आधारित निज-स्वरुप के ध्यान या चितवन से होता है। चितवन की सफलता अंत:करण में ब्रह्मज्ञान को आत्मसात् करने पर, ज्ञान को अपनी रहनी में लेने पर निर्भर है। ब्रह्म ज्ञान से परमात्मा की पहचान करलेने से जब हमारी

कथनी, रहनी और आत्मिक स्थिति (दशा) में एकरुपता आती है। तब ही निज-स्वरुप का बोध होता है, प्रियतम परमेश्वर की कृपा का अवतरण होता है और दिव्य मिलन के द्वार खुल जाते हैं।

साथियों ! निश्चित जान लो कि यह ब्रह्म-ज्ञान आप के मन, हृदय, जीव और आत्मा को एक प्रियतम से जोड़ देगा। आप के ज्ञान, प्रेम, ध्यान और चितवन को एक कर देगा। पूर्णब्रह्म के श्री चरणों में बैठी अपनी 'पर-आत्मा' से कड़ी-बद्ध कर देगा। यह ब्रह्मज्ञान आप को दिव्य परमधाम के इश्क-आनन्द में रमण करायेगा। यही 'निजानन्द' का सुख है, जो हम सब पल-पल चाहते हैं।

तो अब आईये ! इस ब्रह्मज्ञान के महासागर में से कुछ चुनी हुअी मोती रुप चौपाईयों का आत्म-मंथन करते हैं। विश्वास है, इन ब्रह्मवचनों में निहित भाव आप के हृदय को छू लेगा और आत्म-जागृति की आप की यात्रा में सहायभूत होगा।

<u>तारतम ब्रह्मज्ञानः</u>

<u>अनमोल जीवन में अनमोल भेंट</u>

तारतम लई श्री राज पधारया,
थयुं ते सर्व ने जाण।
सखियों के हे अमे आवीने मलशुं,
मल्या ते मूल एंधाण॥ किरंतनः १२४/५

"मोह, माया और अज्ञान के अंधकार से अखंण्ड आनंद के प्रकाश में ले जाने वाला तारतम ब्रह्मज्ञान लेकर प्रियतम परब्रह्म "श्री राज" स्वयं पधारे हैं। बड़ी खुशी की बात है कि सब लोग अब इस से परिचित हो रहे हैं। अखंड परमधाम की ब्रह्मात्मा सखियां बड़े आनन्द और उत्साह में आकर कह रही है, "अब तो हम अपने प्रियतम परमेश्वर से दौड़ कर आ मिलेंगी।" अब इस तारतम ज्ञान से हमें अपने मूल "स्व-लीला अद्वैत्" धाम के सभी निशान मिल गये हैं।"

ए भारे वचन छे निरधार,
साथ करशे एह विचार।
जो ना कहूंसत नो सार,
तो साथ के मपहोंचसे पार॥ रासः १/४५

"ब्रह्मज्ञान के ये वचन बहुत ही गहन एवं महत्वपूर्ण हैं। कोमल और निर्मल हृदय वाले साथी (सुंदरसाथ) अवश्य इस पर गंभीरता पूर्वक विचार करेंगे। यदि मैं आप से सत्य ज्ञान का सार नहीं कहती हूं, तो मेरे धाम के मूल संबंधी, अर्थात् आप सभी आत्मायें भव से पार (अज्ञान से मुक्त) कैसे हो

पायेंगी ?”

ना के हेवाय माया मांहे आ वाणी,
पण साथ माटे केहेवाणी।
साथ आवशे रुदे आणी,
ते में नेहेचे कह्युं जाणी ॥ रास: १/४४

‘यद्यपि तारतम ब्रह्मज्ञान के ये वचन इस संसार में कहने योग्य है ही नहीं। लेकिन हम सभी साथियों के आध्यात्मिक लाभार्थ ही यह अवतरित हुए हैं। इन वचनों को हृदय में धारण करके ही सभी आत्मीय साथी प्रियतम के श्री चरणों में जागृत हो पायेंगे। मुझे इस बात पर पूरा विश्वास है।”

<u>इश्क और ईमान के सहयोग से ही</u>
<u>खुदाई इलम खुदाई फल प्रदान करता है।</u>

विश्वास करके दौड़े जे,
तारतम का फल सोई ले।
तिन कारन करों प्रकाश,
ब्रह्मसृष्टि पूरण करुं आश ॥ प्रकाशहि.: १९/२०

“अब जो कोई भी तारतम ब्रह्मवाणी पर विश्वास करके परब्रह्म परमात्मा पर अनन्य प्रेम से समर्पित होगा, वह अवश्य ही इस का फल (आनंद, ब्रह्म साक्षात्कार) प्राप्त कर लेगा। आप सभी ब्रह्मात्माओं की इच्छा पूर्ण करने के लिए ही इस ब्रह्मवाणी का प्रकाश कर रहा हूं।”

कहती हूं उम्मत को,

सुनसी सब संसार।
मकसूद तिन का होयसी,
जो लेसी एह विचार ॥ खुलाशा : १६/१

“वैसे तो धाम के मूल संबंधी ब्रह्मात्माओं को परब्रह्म के दिव्य स्वरुप की पहचान करने के लिये ही इस ब्रह्मज्ञान को कहा जा रहा है। इस ज्ञान को सारा संसार सुनेगा। लेकिन जो इस पर पूर्ण विश्वास करेगा, सिर्फ उसे ही अखंड का सुख मिलेगा।”

श्री प्राणनाथजी फरमाते हैं कि “आत्मा रुपी पंखी ब्रह्मज्ञान (इलम) रुपी ईंधन (शक्ति) एवं अनन्य प्रेम (इश्क) और अटल श्रध्धा (ईमान) रुपी पंखों से अक्षरातीत परमधाम का सफर तय कर सकता है। इस प्रकार के स्वाध्याय से पूर्ण प्रेम का स्वरुप फलित होने पर ही आत्म-जागनी का दिव्य-यज्ञ सम्पन्न होना है।”

इलम खुदाई ना होता,
तो क्यों संदेशे पहूंचत।
नूर तजल्ला के अन्दर की,
कौन इशारतें खोलत ॥ खिलवत: ३/४५

“साथियों! यदि आप को स्वयं परब्रह्म द्वारा यह तारतम ज्ञानरुपी आत्मिक बल देने वाला ईंधन बख्शीश में नहीं मिलता, तो आपके द्वारा भेजे गये संदेशे (अर्जी, प्रार्थना) उन तक कैसे पहुंच पाते ? इस अद्भूत बख्शीश के बिना अक्षरातीत प्रियतम के

सानिध्य में होने वाली हमारी इश्क-आनन्द की लीला की रहस्यमयी बातें कौन स्पष्ट करता?"

तमे तारतम ना दातार,
अजवालूं कीधुं अपार।
साथ तणा मनोरथ जेह,
सर्वे पूरन कीधा तेह ।। रासः २/१०

"हे प्रियतम प्राणनाथ ! आप ही तारतम ज्ञानरुपी दिव्य प्रकाश प्रदान करने वाले हैं। इससे हमारे हृदय में एवं सारे ब्रह्मांड में ज्ञान का अपार प्रकाश फैल रहा है। हम सब सुन्दसाथ के जितने भी मनोरथ थे, उन सब को आप ही ने पूर्ण किये हैं।"

<u>तारतम ज्ञान संसार में सबसे न्यारा है ।</u>

वाणी मेरे पियु की,
न्यारी जो संसार।
निराकार के पार थें,
तिन पार के भी पार ।। प्रकाशहि.: ३७/३

"हे धनी ! आप की दिव्य वाणी इस संसार में सबसे निराली है । यह अद्वितीय ज्ञान हमें ऐसे सर्वश्रेष्ठ अक्षरातीत परमधाम में ले जाने में सक्षम है, जो साकार और निराकार की उपमाओं से युक्त असत्य, जड़ और दुःखरुपी कालमायिक ब्रह्मांड से परे है। इतना ही नहीं, यह हमें अक्षरब्रह्म के अखंड धाम से भी परे पहुंचाने वाली है।"

या वाणी के कारने,

कई कई रेतपसन।
या वाणी के कारने,
कई पीवें अगिन ।। प्रकाशहि.: ३१/९५

"इसी ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिए कई ऋषियों एवं मुनिजनों ने पूर्व में घोर तपस्यायें की हैं। ब्रह्मज्ञान प्राप्त करके ब्रह्म का आनन्द प्राप्त कर सकें, इसके लिए कितने ही साधकों ने अग्निपान तक भी किया है, फिर भी उन्हें अपेक्षित फल नहीं मिला, जो हमें इस समय मिल रहा है।"

तारतम जोत उद्दोत है,
तिनथें कहा होए।
एक सुपन दूजा वतन,
जीव देखे दोए ।। प्रकाशहिः ३१/१२८

"प्रिय आत्म-खोजी साथियों ! तारतमज्ञान की ज्योति प्रखर और बड़ी ही प्रभावशाली है। इस वाणी के प्रकाश में ऐसा चमत्कार होता है कि एक ही समय में जीव स्वप्नवत् ब्रह्माण्ड भी देखता रहता है और मूलवतन अखण्ड परमधाम का ज्ञान भी हो जाता है।"

तारतम रस वाणी कर,
पिलाईए जाको।
जेहेर चढ़्या होए जिमी का,
सुख होवे ताको ।। प्रकाशहि.: ३१/१३७

"तारतम ब्रह्मवाणी का रस जिसको पिला (सुना) दिया जाये, यदि उस के ऊपर मायावी जगत के तिलस्मी आकर्षण का प्रभाव चढ़ा हो, तो वह उतर जाता है। अर्थात् माया की शक्ति को पहचान कर जीव भ्रम और अज्ञान की नींद से जाग्रत हो जाता है। उस पर माया का विष कोई असर नहीं कर सकता और उसे अखंड सुख प्राप्त हो जाता है।"

एही तुमारी भूल है,
तुमें बंधन याही बात।
एही फरामोशी तुम को,
जो भूल गए हक जात॥ खिलवत : १५/६४

"हे ब्रह्मात्माओं ! यही तो तुम्हारी भूल है। मायावी बंधन में बंध जाने का कारण यही है कि तुम अज्ञान, भ्रमरुपी नींद में अपने मूल तन, युगल स्वरुप प्रियतम धामधनी से अंगी व अंगना के संबंध को पूर्ण रुप से भूल चूकी हो।

बिना विचारे रेहत है,
तुमपे हक इलम।
ए सहूर रुहें पोहोंचहीं,
तब ही उड़े तिलसम॥ खिलवत: १५/७४

"आपके पास परब्रह्म परमात्मा का दिया हुआ तारतम ज्ञान तो है। परंतु तुम उसका चिन्तन

मनन (मंथन) नहीं करते हो। यदि ब्रह्मात्माओं के दिल तक ब्रह्मज्ञान का रस संचरित हो जाये और ज्ञान अमल में आ जाये, तो माया का यह फंद तो सहज ही उड़ जायेगा।"

एही रस तारतम का,
चढ़्या जेहेर उतारे।
निरविख्र काया करे,
जीव जागे करारे॥ प्रकाशहि.: ३१/१४२

"साथियों ! यह निश्चित जान लो कि तारतम ब्रह्मज्ञान का यह रस अंत:करण में चढ़े हुए माया के विष को उतार देगा। यह ब्रह्मज्ञान ही अज्ञान, मोह, अहंकार को समाप्त कर के हमारे अस्तित्व को निर्मल बनाता है। फलस्वरुप 'जीव' जाग्रत होकर अखंड सुख व शांति प्राप्त कर लेता है। इसलिये यदि तुम्हारी आत्मा साक्षी दे तो तुम तारतम वाणी को सत्य मान कर इसे अंगीकार कर लो। इससे तुम्हें अवश्य ही परमधाम के अखंड सुख प्राप्त होंगे।"

सुख बड़े तारतम के,
क्यों जाहेर कीजे।
वानी माएने देख्रके,
जीव जगाए लीजे॥ प्रकाशहि.: ३१/१४४

"तारतम ब्रह्मज्ञान के सुख अपार हैं। इन्हें कैसे प्रगट किया जाये ? खुद ही वाणी मंथन करके अपने 'जीव' को जाग्रत कर लीजिए।"

ए वचन सुनते बाढ़े बल,
सोई लेसी तारतम को फल।
तारतम फल जागिए इन घर,
कहे महामति ए हिरदे धर।। प्रकाशहि.: ३४/२४

"तारतम ब्रह्मज्ञान के इन वचनों को सुनने मात्र से आत्मिक बल बढ़ने लगता है, वह रहनी में आकर उसके फल (ब्रह्मानंद) को प्राप्त कर लेता है। उसके परिणाम स्वरुप अंततः उसकी आत्मा (सूरता, ध्यान) परमधाम में स्थित अपने मूल तन (पर-आत्म) में जाग्रत हो जायेगी। प्रियतम की दिव्य शक्तियों से विभूषित मैं महामति इन वचनों को सर्वप्रथम अपने हृदय में धारण करके ही आपसे कहती हूं।"

कुं जर काढों चींटी मुख,
सुध आनो शरीर।
तारतम के हे जुदे जुदे,
करें खीर और नीर।। प्रकाशहि.: ३१/१५८

"तारतम ब्रह्मज्ञान के द्वारा चींटीरुप (कमजोर, अस्तित्वहीन) माया के मुख से आप सभी हाथीरुपी (शक्तिशाली, सत्य स्वरुप) ब्रह्मात्माओं को सदा सदा के लिये मुक्त करदूंगी। आपको अपने मूल तनों (दिव्य स्वरुप) की पहचान करा दूंगी। तारतम ब्रह्मज्ञान का वर्णन करके, दूध (ब्रह्म) और पानी (माया) अलग-अलग करदूंगी।"

तारतम का बल कोई न जाने,
एक जाने मूल सरुप।
मूल सरुप के चित्त की बातें,
तारतम में कई रुप।। कलशहि.: २३/५५

"साथियों! हकीकततो यह है कि तारतम के सामर्थ्य को दूसरा कोई भी नहीं जानता है। केवल स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मा ही जानते हैं, जिनके हृदय की गुह्य बातें तारतम ब्रह्मज्ञान में अनेक रुप से प्रकटहुई हैं।"

ए वाणी गरजत मांझ संसार,
खोजी खोज मिटावे अंधार।
मूढमती ना जाने विचार,
महामति कहे पुकार पुकार।। किरंतनः ३/९

"इस ब्रह्मवाणी की गर्जना संपूर्ण संसार में हो रही है। जो कोई भी आत्मज्ञान के जिज्ञासु-खोजी हैं, वे इसे ग्रहण करके अपने हृदय का अज्ञानांधकार मिटा रहे हैं। लेकिन, जिनकी मति ही भ्रमित हो गयी है, ऐसे मनुष्य इस पर गंभीरता पूर्वक विचार नहीं करते। ब्रह्मवाणी को अनसुनी करने वालों को महामति जी अपनी बुलन्द आवाज से पुकार-पुकार कर समझा रहे हैं।"

कलाम अल्ला या हदीसें,
शास्त्र पुरान या वेद।
ए सब सुख लेवे मोमिन,

हक रसना के भेद ।। सिनगारः १६/१९

"कलाम अल्लाह (कुरआन) हो या हदीसें, शास्त्र-पुराण हों या वेद, इन सभी धर्मग्रंथो में सांकेतिक रुप से वर्णित ब्रह्मज्ञान के सुख्र (तारतम ज्ञान के प्रकाशमें) ब्रह्मात्माएं ही प्राप्त करतीहै।"

रुहों लज्जत मांगी हक पे,
अर्स कीदुनियां माहें।
तो इलम दिया सबों अपना,
बिना इलम लज्जत नाहें ।। सिनगारः २८/२३

"परमधाम के अखंड सुखों का स्वाद इस नश्वर जगत में मिले, यह इच्छा हम ब्रह्मात्माओं ने परब्रह्म से व्यक्त कीथी। इसीलिये तो उन्होंने हमें तारतम ब्रह्मज्ञान प्रदान कियाहै। ब्रह्मज्ञान के बिना आत्मा कोपरमधाम के अखंड सुखों काअनुभव हो ही नहीं सकता।"

<u>ब्रह्मवाणी का चमत्कारः सर्वत्र प्रेम ही प्रेम</u>

ऐसा इलम हकें दिया,
हुआ इश्क चौदे भवन।
मूल ड़ार पात पसरया,
नजरों आया सबन ।। सिनगारः २८/३५

"धामधनी ने हम ब्रह्मात्माओं कोब्रह्मवाणी

के रुप में ऐसा दिव्य ज्ञान दिया है, जिस पर अमल करने से सभी ब्रह्मात्माओं कोचौदह लोकों कायह ब्रह्मांड प्रेम ही प्रेम से भरा हुआ नजर आ रहा है (जो कुछभी संसार में हो रहा है, वह सब राजजी काप्रेम ही है।"

नजरों आया सबन के,
जब पसरया ए इलम।
तब और न देखे कछूनजरों,
बिना इश्क खसम ।। सिनगारः २८/३७

"जब ब्रह्मवाणी के ज्ञान का प्रचार-प्रसार चारों तरफ हो जायेगा, तो सभी कोहर तरफ(प्रत्येक क्रियाओं में) प्रियतम परमात्मा का प्रेम ही प्रेम नजर आने लगेगा। उस समय किसी को प्रियतम परमात्मा के प्रेम के अतिरिक्त और कुछभी दिखाई नहीं देगा।"

जब ए इलम रुहों पाईया,
इश्क हो गया चौदे तबक।
और देखे न कछुएनजरों,
सब देखे इश्क हक ।। सिनगारः २/३३

"तारतम ब्रह्मज्ञान काप्रकाशमिलने पर हम ब्रह्मात्माओं कीदृष्टि में इस चौदह लोक के ब्रह्मांड में सर्वत्र श्री राजजी काप्रेम ही प्रेम दिखायी देने लगा। उस के अतिरिक्त और कुछ भी नजर नहीं आया। सभी जगह परमात्मा काप्रेम ही प्रेम नजर

आने लगा।"

इलम दिया सबन को,
कि या अर्श दिल मोमिन।
दूर क रसब हिजाब,
आप आए अर्श दिल इन।। सिनगारः २८/२०

"परब्रह्म परमात्मा ने सभी ब्रह्मात्माओं को तारतम ज्ञान प्रदान क रके उनके दिल को अपना धाम बनाया है। प्रियतम धनी ने इस ब्रह्मज्ञान के प्रकाश से, ब्रह्मात्माओं के दिलों में स्थित अज्ञानरुपी पर्दे को समाप्त क र दिया है। और स्वयं (नख्र से शिख्र तक शोभा-श्रृंगार सहित) उनके धामहृदय में आक रविराजमान हो गये हैं।"

एक इश्क दूजा इलम,
ए दोऊ मोमिनों हक न्यामत।
इश्क गरक वाहेदत में,
इलमें हक अर्स लज्जत।। सिनगारः २५/७७

"प्रेम और तारतमज्ञान ये दोनों ही नैमतें (निधी) प्रियतम परब्रह्मने ब्रह्मात्माओं को दी हैं। अनन्य प्रेम से ब्रह्मात्माएं प्रियतम परमात्मा के एकात्मभाव (अद्वैत स्वरुप) के आनन्द में निमग्न हो जाती हैं और तारतम ब्रह्मज्ञान के द्वारा धामधणी व परमधाम के अखंड सुखों का आनन्द अनुभव क रती हैं।"

ए इलम ए इश्क,
दोऊ इन हक को चाहें।
पर जिनको हक जो देत हैं,
सो लेवे शिर चढ़ाए।। सागरः ५/१४०

"ब्रह्मज्ञान व प्रेम, ये दोनों ही प्रियतम धनी की चाहना रखते हैं। परंतु जिस आत्मा को श्री राजजी दोनों में से जो निधि, जिस प्रमाण में देते हैं, वह उसे शिरोधार्य क रलेती है (इश्क में इल्म का अंश होता है और इल्म में भी इश्क का अंश होता है, दोनों ही राजजी के चरणो में ले जानेवाले हैं।"

इलम दिया तुमें खुदाई,
तब बदले कौल चाल।
फैल होवे वाहेदत का,
तब बेर ना लगे हाल।। खिलवतः १५/६२

'साथियों ! प्रियतम प्राणनाथ ने आप को अपना तारतम ब्रह्मज्ञान बख्शीश कि या है। जिससे आप की कथनी और आत्मिक दशा बदल जायेगी। जब आप की रहनी (आचरण) जाग्रत ज्ञान पर आधारित (अद्वैत परब्रह्म के दिव्य आत्मिक संबंध के अनुरुप) होगा, तब आप को अनन्य प्रेम की (आत्मिक) दशा में आने में जरा भी देर नहीं लगेगी।"

बेशक इलम सीख्र के,
ऐसे ख्रेल को पीठ दे।

देख्यो कौन आवे दौड़ती,
आगूं इश्क मेरा ले ।। खिलवत: १६/८५

"परब्रह्म धनी देखना चाहते हैं कि अब हम में से कौन सी ऐसी आत्मा है जो उनके संशयरहित तारतमज्ञान का मंथन करके हृदय में धारण करती है, उसके निर्देशानुसार मायावी जगत (के सुखो) को पीठ देकर (आशा छोड़कर) अपने दिल में उनका इश्क भरकर, अपार उत्साहपूर्वक, उनके पास दौडते हुए आती है।" साथियों ! विचार करना है, क्या हम अपने प्रियतम धनी की चाहत पूरी करने तैयार हैं ?

ए इलम लिए ऐसा होत है,
आप बेशक होत हैयात ।
और कायम हुए देखे सबको,
पावे दीदार बातून हक जात ।। सिनगार: २९/४४

"तारतम ब्रह्मज्ञान प्राप्त होने पर ऐसी स्थिति हो जाती है कि स्वयं ही निश्चित रुप से अखंडता को प्राप्त कर लेते हैं (अपने अखंड निज स्वरुप का ज्ञान हो जाता है) और तारतमज्ञान के द्वारा सारी सृष्टि को भी अखंड होता हुआ देखते हैं। साथ ही परब्रह्म और उनकी आत्माओं की गुह्य बैठक के दर्शन भी प्राप्त कर लेते हैं"।

महामत कहेए मोमिनों,
ए ऐसी कुंजी इलम ।
ए मेहेर देख्यो मेहेबूब की,

तुमको पढ़ाए आप खसम ।। सागर : १३/५३

"प्रियतम प्राणनाथ की दिव्य शक्तियों से विभूषित मैं महामति कह रही हूं कि, हे ब्रह्मात्माओं ! समस्त धर्मग्रंथों के रहस्य स्पष्ट करने वाली इस तारतम ज्ञान रुपी चाबी की महिमा इस प्रकार की है। प्रियतम अक्षरातीत की अपार मेहर (लाड) तो देख्यो कि वे स्वयं ही तुम्हें इस ब्रह्मवाणी के रहस्य (तुम्हारे हृदय में विराजमान होकर) पढ़ा रहे हैं।"

श्री प्राणनाथजी की तारतम वाणी का संक्षिप्त परिचय

साथियों ! तारतम ब्रह्मज्ञान का भंडार श्री कुलजमस्वरुप के चौदह (१७) ग्रंथों में समाहित है। ये ग्रंथ इस प्रकार हैं : **श्री रास, प्रकाश (हिं.,गु.), षटरुती, कलश(हिं., गु.) सनंध, किरंतन, खुलासा, खिलवत, परिक्रमा, सागर, सिनगार, सिंधी, मारफत सागर तथा कयामत नामा (छोटा, बड़ा)**। इन सभी ग्रंथों में कुल मिलाकर ५२६ प्रकरण और १८, ७५८ चौपाइयां हैं।

श्री रास ग्रंथ अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति के रस से भरा है, जिसमें प्रियतम परब्रह्म और उनकी आत्म-रुपा सखियों के बीच हुई ब्रज और रासलीला का वर्णन है। उन गोपियों के समान शुद्ध प्रेम-सेवा के भाव को जगा कर ही हम आत्म-जागनी लीला का श्रेष्ठ आनंद ले सकते हैं।

प्रकाशग्रंथ में आत्म-बोधक तारतम ज्ञान है, जिसमें सद्गुरु धणी के प्रति कृतज्ञताभाव, विरह वेदना की अभिव्यक्ति, अपने गुण-अंग-इंद्रियों को परमात्मा की ओर उन्मुख करने के उपाय और संसार में रहते हुए प्रियतम प्राणनाथ की प्रेम-सेवा में पुर्णतः समर्पित रहने की प्रेरणा है।

षटरुती ग्रंथ में छः ऋतुओं में विरही आत्मा का अपने सत्गुरु और प्रियतम पारब्रह्म के प्रति विरह-वेदना का वर्णन है।

कलश ग्रंथ में ब्रह्म-बोधक ज्ञान के शिखर स्वरुप विषयों, जैसे कि - सृष्टि के पंच अनादि प्रश्नों, धर्म के वास्तविक स्वरुप, वेदों और अवतारों का रहस्य इत्यादि का ज्ञान है।

सनंध ग्रंथ में कुरआन आदि कतेब परंपरा के धर्मग्रथों का मूल आशय (गूढ़ार्थ) और शरियत(कर्मकांड)के बंधनों से परे इस्लाम (शांति के मार्ग) के वास्तविक स्वरुप को स्पष्ट करके सर्वधर्म समभाव को जाग्रत किया गया है।

किरंतन ग्रंथ में आत्म-जागृति के विविध आयामों पर प्रकाश डालने वाली गहन वाणी है। तारतम वाणी के सभी विषयों का इसमें समावेश है।

खुलासा ग्रंथ में वेद व कतेब पक्ष का एकीकरण किया गया है।

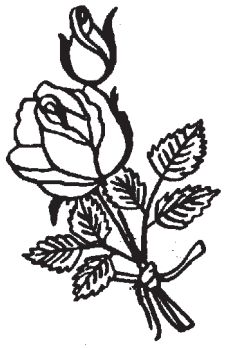

खिलवत ग्रंथ में आत्मा और परमात्मा के मध्य दिव्य परमधाम में हुई प्रेम-वार्ता का और पुनः पर-आत्म स्वरुप में जाग्रत होने की विधी दर्शायी गयी है।

परिक्रमा ग्रंथ में दिव्य प्रेम के स्वरुप की पहचान करायी गयी है। आत्म-जाग्रति के विविध आयामों पर प्रकाश डाल कर सच्चिदानंद परमधाम में आनंद लीला विहार कराया गया है।

सागर ग्रंथ में प्रियतम परब्रह्म के हृदयकमल से अनवरत प्रवाहित हो रहे अनंतविधि भावों (लाड प्यार) के आठ सागरों का वर्णन है, जिस में गोता लगा कर आत्मा अपने प्रियतम के दिल तक पहुंच सकती है।

सिनगार ग्रंथ में स्व-लीला अद्वैत परब्रह्म अक्षरातीत के दिव्य श्रृंगार का वर्णन है, जिसका पल-पल ध्यान करते हुए आत्मा संसारी खेल में भी अखंड धाम के सुख ले सकती है। मूल स्वरुप में एकाकार हो जाने पर ब्रह्म और ब्रह्मात्मा में कोई भेद नहीं रह जाता है।

सिंधी ग्रंथ में एक जाग्रत आत्मा अन्य सभी आत्माओं की जाग्रति के लिये अपने प्रियतम धनी से अधिकारपूर्वक प्रार्थना करती है और अपने भावविभोर करने वाले संवाद से सब को अपनी अपनी जीवन (रहनी) पर ध्यान देने के लिये प्रेरित करती है।

मारफत सागर ग्रंथ में कुरआन के सांकेतिक कथनों, आखिरत की निशानियों तथा मारिफत (आत्मा की सर्वोच्च जाग्रत अवस्था या पूर्ण पेहेचान) का ज्ञान है। कर्मकांड(शरीयत),उपासना (तरीकत) और ज्ञान (हकीकत) से परे परम सत्य (मरिफत) के विज्ञान का सूर्योदय होने पर ही प्रियतम धनी के श्री चरणों में जागना संभव है।

कयामत नामा ग्रंथ में आत्म-जाग्रति के अंतिम चरण "आत्मा-परमात्मा के मिलन'' के लक्ष्य को कुरान और हदीसों के पुराने किस्से और कहानियों के गुह्य अर्थो के माध्यम के स्पष्ट किया गया हैं।

साथियों ! इस तरह, यह तारतम ब्रह्मज्ञान आपके ध्यान को आप के मूल दिव्य स्वरुप में, निज आनंद में पहुँचाने का एक मात्र उपाय है, जहां प्रेम व आनंद का महासागर लहरा रहा है, । विश्वभर में धर्म के नाम पर फैले वैमनस्यों को मिटाने की यही एक मात्र दिव्य औषधि है, जो सभी आस्थाओं का सम्मान करते हुये, "सुख शीतल करुं संसार" का अर्थात् विश्व में सुख, शांति और आनंद का विस्तार करने का श्री प्राणनाथजी का ब्रह्म-वचन है। आप धन्य हैं, क्योंकि आपने आत्म-जाग्रति के पथ पर आगे कदम रखना शुरु कर दिया है।

शुभ आशिष

।। सप्रेम प्रणाम जी ।।

इतना तो अवश्य याद रखें ।

- आत्म-खोजी बन कर ब्रह्मवाणी रुपी महासागर में गोता लगा लो और भ्रम का अंधेरा मिटा दो।
- प्रियतम परमेश्वर प्राणनाथ स्वयं ही तारतम ज्ञान रुपी दिव्य प्रकाश कर रहे हैं, जिसका अवतरण इस सौभाग्यशाली २८ वें कलियुग के अंतिम चरण में होना शास्त्रों में पहले से ही लिखा हुआ है।
- अनन्य प्रेम और श्रद्धा रुपी पंखों से और ब्रह्मज्ञान रुपी ईंधन (शक्ति) से आत्मा ब्राह्मी फल प्राप्त कर सकती है।
- ब्रह्मज्ञान के सामर्थ्य को केवल स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मा ही जानते हैं, जिनके दिल की बातें तारतम में अनेक रुप में प्रकट हुई हैं।
- तारतम ब्रह्मज्ञान अद्वितीय है । इसका प्रकाश ध्यान द्वारा हमारी चेतना को साकार और निराकार की उपमाओं से युक्त असत्य, जड़ और दुःखरुपी कालमायिक ब्रह्मांड से परे अखंड परमधाम का सुख अनुभव करा सकता है।
- ब्रह्मज्ञान से माया की शक्ति को पहचान कर जीव अज्ञान की नींद से जाग्रत हो जाय, तो फिर स्वप्न रह ही कैसे सकता है ?
- आत्मा को अपने मूल दिव्य स्वरुप का अनुभव व प्रियतम धामधणी से अंगी व अंगना के अपने संबंध की याद आ जाना ही ब्रह्मज्ञान होना है।
- ब्रह्मज्ञान माया के विष को उतार कर हमें निर्मल बना देता है । यदि तुम्हारी आत्मा साक्षी दे तो इसी वक्त शिरोधार्य कर लो।
- ब्रह्मज्ञान से ही ब्रह्म और माया का अलग-अलग निरुपण हो पाता है। चींटी रुप (स्वप्नवत्) माया के मुख से हाथी रुपी (सत्य स्वरुप) ब्रह्मात्माओं को सदा सदा के लिए मुक्ति मिल जायेगी।
- यदि परब्रह्म हमारे हृदय में अपना इश्क जाग्रत कर दें तो पल भर में हमारी नजर संसार से हट कर परमधाम की एकदिली के भाव में निमग्न हो सकती है ।
- ब्रह्मवाणी पर अमल करने से यह चौदह लोकों का ब्रह्मांड प्रेम से भरा हुआ नजर आयेगा।
- ब्रह्मज्ञान व प्रेम दोनों ही प्रियतम के चरणों की चाहना रखते हैं। परंतु धनी जिसे जो, जिस प्रमाण में देते हैं, वह उसे शिरोधार्य कर लेता है।